Sanskritik aur Samajik Anusandhan
www.shodhjournal.com
ISSN: 2582-5852; Impact Factor: RJIF 5.44
Received: 25-09-2020; Accepted: 10-06-2020; Published: 26-10-2020
Volume 2; Issue 1; 2020; Page No. 31-32

तुलनात्मक साहित्य

पूनम गुप्ता
जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, भारत

प्रस्तावना

तुलनात्मक साहित्य की आवधारणा पूरी तरह से 19वीं शताब्दी की देन है। यह अवधारणा यूरोप के फ्रांस, जर्मनी और एलैण्ड में उपजी। ऐसा माना जाता है कि 'तुलनात्मक साहित्य' (कैम्परेटिव लिटरेचर) पद का सबसे पहले प्रयोग 1816 में प्रकाशित संग्रह *Course de Literature Compare* में किया गया। फिर आगे चलकर सन् 1848 में मैथ्यू अर्नाल्ड ने अंग्रेजी में तुलनात्मक साहित्य की अवधारणा प्रस्तुत की। जर्मनी में इसके इस्तेमाल 1854 में हुआ। इस प्रकार तुलनात्मक साहित्य अंग्रेजी, फ्रांसीसी अथवा जर्मन साहित्य के स्वतन्त्र अध्ययन के वाद विकसित हुआ। जो भारतीय साहित्य से निश्चित ही पहले का है। तुलनात्मक अध्ययन के क्षेत्र में अमरीकी स्कूल, पेरिस स्कूल एवं रूसी स्कूल का महत्वपूर्ण योगदान है।

तुलनात्मक साहित्य को प्रकाशित करते हुए रेनेवेलेक कहते हैं कि ''तुलनात्मक साहित्य' साहित्य के समग्र रूप का अर्न्तराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में अध्ययन करता है। जिसके मूल में यह भावना निहित रहती है कि साहित्यिक सृजन और आस्वादन की चेतना जातीय एवं राजनैतिक, भौगौलिक सीमाओं से मुक्त एक रस और अखण्ड होती है।''[1] जबकि रेमाक का कहना है कि ''तुलनात्मक साहित्य' एक राष्ट्र के साहित्य की परिधि के परे दूसरे राष्ट्रों के साहित्य के साथ तुलनात्मक अध्ययन है। यह अध्ययन कला, इतिहास, समाज, विज्ञान, धर्मशास्त्र आदि का ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों के आपसी संबंधों का भी अध्ययन है।''[2]

दोनों ही विद्वानों में एक बात समान दिखाई पड़ती है वो है राष्ट्र की सीमा की संकीर्णता से मुक्ति। रेनेवेलेक जातीय, राजनैतिक एवं भौगोलिक सीमाओं से मुक्ति की बात करते हैं जबकि रेमाक का मानना है कि तुलनात्मक अध्ययन ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों के आपसी संबंधों का अध्ययन है। यथा–राजनीति, कला, इतिहास, समाजविज्ञान।

संकीर्णता की सीमा से मुक्ति की बात जहाँ तक है वहाँ तक तो ठीक है। पर क्या किसी साहित्य का अध्ययन सर्वथा राजनैतिक और भौगोलिक सीमा से मुक्त होकर किया जा सकता है? इस दृष्टि से विचार करने पर रेमाक की परिभाषा अपेक्षाकृत अधिक व्यवहारिक जान पड़ती है। जिसमें उन्होंने कला, विज्ञान, इतिहास, धर्मशास्त्र आदि आपसी सम्बन्धों के अध्ययन पर जोर देते है। हाँ इतना जरूर है कि इनके बीच के आपसी सम्बन्धों के अध्ययन के दौरान राष्ट्रवाद के संकीर्ण सीमाओं से मुक्त हो जाना चाहिए। तभी तुलनात्मक साहित्य का औचित्य सार्थक होगा।

टी0एस0 एलियट तुलनात्मक साहित्य को आलोचना से जोड़कर देखते हैं। उनका मानना है कि ''तुलना और विश्लेषण आलोचक के प्रमुख औजार हैं। मूल्यांकन आलोचना की श्रेष्ठता को मापने के लिए तुलनात्मक पद्वति का लाभ उठाती है।''[3] पासनेट तुलनात्मक साहित्य के विकास के लिए साहित्यिक सिद्वान्तों के अध्ययन को अनिवार्य मानते हुए कहते है कि–''साहित्यिक विकास के सामान्य सिद्वान्तों का अध्ययन निश्चय ही तुलनात्मक साहित्य का महत्वपूर्ण अंग है।''[4] टी0एस0 एलियट एवं पासनेट की परिभाषाएँ साहित्यिक विकास के लिए महत्वपूर्ण हैं।

तुलनात्मक साहित्य से सम्बन्धित दी हुई पाश्चात्य विद्वानों की परिभाषाओं के विवेचन के बाद भारतीय साहित्स–शास्त्रीयों की परिभाषाओं पर भी विचार कर लेना उचित जान पड़ता है। डॉ0 नागेन्द्र तुलनात्मक साहित्य को परिभाषित करते हुए लिखते है कि– '' तुलनात्मक साहित्य' एक प्रकार का अन्तः साहित्यिक अध्ययन है जो अनेक भाषाओं का आधार मानकर चलता है और जिसका उद्देश्य होता है– अनेकता में एकता का संधान।''[5] विभिन्न भाषाओं और विविधतायुक्त राष्ट्रों की सीमाओं को दरकिनार करते हुए डॉ0 नागेन्द्र की परिभाषा का बीज शब्द 'अनेकता में एकता का संधान' हैं। तुलनात्मक साहित्य की भावना के महत्व को रेखांकित करता है। तुलनात्मक साहित्य की परिभाषा इंद्रनाथ चौधरी इस प्रकार देते हैं–'' 'तुलनात्मक साहित्य' विभिन्न साहित्यों का तुलनात्मक अध्ययन है तथा साहित्य के साथ ज्ञान के दूसरे क्षेत्रों का भी तुलनात्मक अध्ययन है।''[6] पाश्चात्य विद्वान रेमाक की ही भाँति भारतीय विद्वान इंद्रनाथ चौधरी ने भी साहित्य के साथ ज्ञान के विविध क्षेत्रों के तुलनात्मक अध्ययन पर जोड़ देते हुए तुलनात्मक साहित्य के फलक का विस्तार करते हैं। नागेन्द्र और चौधरी में एक बात समान दिखाई पड़ती है, वो है विविध भाषाओं का अंतः साहित्यिक अध्ययन।

इस प्रकार उपरोक्त परिभाषाओं के विश्लेषण से जो बातें निकलकर सामने आती हैं। सरल शब्दों में इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है। 'तुलनात्मक साहित्य' दो संस्कृतियों, दो राष्ट्रों एवं दो कालखण्डों की दो अलग–अलग अथवा एक ही भाषा के साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन होता है। यह अध्ययन लिखित साहित्य को ही लक्ष्य बनाकर किया जाता है। इस अध्ययन में मौखिक साहित्य को शामिल नहीं किया जाता है। 'तुलनात्मक साहित्यिक अध्ययन' उन स्थितियों में भी संभव है जब भाषा एक हो और अलग–अलग राष्ट्र या एक राष्ट्र हो और भाषा अलग।

तुलनात्मक साहित्य, साहित्य के राष्ट्रीय और भाषिक सीमाओं को तोड़ते हुए उसे समग्रता में प्रस्तुत करता है। तुलनात्मक साहित्य के अर्न्तगत साहित्य का अध्ययन राष्ट्र, काल और साहित्य के सीमा के परे जाकर अध्ययन किया जाता है। तथा समानता के बिन्दु को रेखांकित किया जाता है। जैसे–भारत के सन्दर्भ में छायावाद एवं इंग्लैण्ड के सन्दर्भ में स्वच्छन्दतावाद। इन दोनों में समानता के बिन्दु को सामने रखा जा सकता है। चूंकि तुलनात्मक साहित्य के अर्न्तगत दो साहित्यिक रचनाओं के भीतर पाई जाने वाली उन समान 'पैटर्न' को रेखांकित किया जाता है।

तुलनात्मक साहित्य पाठ केन्द्रित अध्ययन को आधार बनाता है। इसीलिए यह लिखित साहित्य तक ही सीमित है। तुलनात्मक साहित्य में देश और काल की चेतना को अनदेखा नहीं किया जा सकता है। भिन्न–भिन्न देशों और सांस्कृतिक एवं भाषिक परम्पराओं के साहित्यिक रचनाओं की

तुलना करते समय उनके परिवेश को ध्यान में रखा जाना चाहिए। तुलनात्मक साहित्य में देश की सीमा का अतिक्रमण करते हुए एक साहित्यकार या साहित्यिक परम्परा के प्रभाव का भी अध्ययन किया जाता है।

तुलनात्मक साहित्य अंतविद्यावर्ती होता है। इसमें अनुवाद का विशेष महत्व है। इसके अध्येता को सारे ज्ञानानुशासन यथा–समाजशास्त्र, सौन्दर्यशास्त्र, इतिहास, राजनीतिशास्त्र आदि विषयों की भी जानकारी होनी चाहिए। तुलनात्मक साहित्य के साथ अनुवाद का सम्बन्ध शुरू से ही रहा है क्योंकि अनुवाद के माध्यम से ही दूसरी भाषा के एवं उसके आचार–विचार एवं संस्कृतियों को जाना जाता है।

तुलनात्मक साहित्य का आरम्भ यूरोप से ऐसे समय में हुआ जब राष्ट्रवाद अपनी जड़ें जमा चुका था। राजनीतिक रूप से भी यूरोपीय देश अपने साम्राज्य विस्तार के लिए एक दूसरे से लड़ रहे थे। इसी के विरूद्ध या यूँ कहें कि ऐसे समय में तुलनात्मक साहित्य राष्ट्रीयता की भावना को लांघकर अर्न्तराष्ट्रीय एकता और सद्भावना को लेकर हमारे सामने आया।

तुलनात्मक साहित्य राष्ट्र की सीमा को तोड़ते हुए अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर साहित्यिक अध्ययन के लिए मार्ग प्रस्तुत करता है। लेकिन राष्ट–राज्यों के उदय की अवधारणाओं और उपनिवेशवाद ने इसे संकुचित कर दिया। राष्ट्रवादियों ने तुलनात्मक साहित्य का इस्तेमाल अपने राष्ट्र को अन्य की अपेक्षा श्रेष्ठ दिखाने के लिए किया तो, उपनिवेशवादियों ने स्वयं की अधिक सभ्य और दाता के रूप में स्थापित करने के लिए। जहाँ तक तुलनात्मक साहित्य से समरसता और सह–अस्तित्व की अपेक्षा की जाती थी, वहाँ अन्य राष्ट्रवाद और उपनिवेशवाद ने इसे वैषम्य और तनावपूर्ण माहौल तैयार करने का हथियार बना दिया। ऐसी स्थिति में तुलनात्मक साहित्य की आलोचना की दृष्टि से रेनेवेलेक का यह मत उचित जान पड़ता है कि–'' साहित्य को राष्ट्रीय सांस्कृतिक सम्मान के युद्ध में शामिल नहीं करना चाहिए, न उसे विदेशी व्यापार के माल के रूप में पेश करना चाहिए''[7]

इस प्रकार तुलनात्मक साहित्य, साहित्य अध्ययन की ऐसी प्रविधि है जिसके माध्यम से साहित्य के नए स्वरूप की समझ विकसित हुई है। जिसमें दो साहित्यों से जुड़ी हुई समस्याओं का विश्लेषण होता है।

सन्दर्भ सूची

1. तुलनात्मक अध्ययन : स्वरूप एवं समस्याएं, डॉ0भ0ह0 राजकपूर, डॉ0 राजमल बोरा (सं.), इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त वि0वि0, वाणी प्रकाशन, द्वितीय संस्करण : 2004, पृ. सं. 34
2. वही पृ. सं. 34
3. वही पृ. सं. 34
4. वही पृ. सं. 34
5. वही पृ. सं. 34
6. वही पृ. सं. 34
7. वही पृ. सं. 165